SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी: परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन

सुष्मिता सिंह[1], डॉ. शिवाकांत पाण्डेय[2]

[1] शोध छात्रा, संस्कृत विभाग , गांधी शताब्दी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोयलसा, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)

[2] शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गांधी शताब्दी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोयलसा, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)

Email: sushmitasingh05995@gmail.com

सारांश

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के एक विशिष्ट विद्वान, गंभीर चिंतक, प्रतिभासंपन्न आलोचक एवं प्रभावशाली लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्हें आधुनिक संस्कृत साहित्य के स्तंभों में एक प्रमुख स्थान प्राप्त है। उनका जन्म १९०७ ईस्वी में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के एक विद्वत् परिवार में हुआ। संस्कृत की पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने आधुनिक पद्धति से भी विद्या अर्जित की। वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय के साहित्य संकाय में लंबे समय तक अध्यापन कार्य से जुड़े रहे और संस्कृत साहित्य के अनेक छात्रों को प्रोत्साहित किया। पंडित द्विवेदी का व्यक्तित्व अत्यंत सरल, सौम्य, विचारशील तथा सृजनशील था। वे आधुनिकता और परंपरा के समन्वयकर्ता थे। उनके चिंतन में भारतीय संस्कृति की आत्मा और आधुनिक समाज की आवश्यकताओं का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है। कृतित्व की दृष्टि से पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य को विविध विधाओं में योगदान दिया है। उनकी प्रमुख रचनाओं में साहित्यदर्पणव्याख्या, काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, नव्या काव्यशास्त्र दृष्टि, भारतीय साहित्यमीमांसा, काव्यबोधनम् आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विशेषकर भारतीय साहित्यमीमांसा उनके चिंतन का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें उन्होंने भारतीय काव्यशास्त्र की मौलिक परंपराओं को आधुनिक सन्दर्भों में पुनर्परिभाषित किया है। पंडित द्विवेदी केवल व्याख्याकार या टीकाकार नहीं थे, बल्कि वे मूल रूप से एक नवोन्मेषी आलोचक थे जिन्होंने साहित्य के सिद्धांतों को युगानुकूल दिशा दी। उनकी आलोचना शैली में तात्त्विक गहराई, भाषा की स्पष्टता तथा शैली की परिष्कृतता देखने को मिलती है। उन्होंने आचार्य आनंदवर्धन, मम्मट, भामह, रुद्रट आदि के सिद्धांतों को पुनः आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाकर प्रस्तुत किया। वे केवल पारंपरिक काव्यशास्त्र में नहीं रुके, अपितु उन्होंने संस्कृत में आधुनिक आलोचना पद्धतियों का भी समावेश किया। उनके कार्यों में न केवल शास्त्रीय दृष्टिकोण की गहराई है, बल्कि आधुनिक विमर्शों — जैसे सामाजिक सरोकार, सौंदर्यबोध, सांस्कृतिक मूल्य आदि — का समावेश भी मिलता है। रेवा प्रसाद द्विवेदी का योगदान मात्र विद्वतजनों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने संस्कृत भाषा और साहित्य को जन-सामान्य तक पहुंचाने का प्रयास भी किया। वे शिक्षाविद्, संपादक, व्याख्याकार एवं मार्गदर्शक के रूप में भी प्रतिष्ठित रहे। उनके नेतृत्व में संस्कृत अध्ययन एवं शोध को एक नई दिशा प्राप्त हुई। वे परंपरा के संवाहक होने के साथ-साथ नवाचार के प्रेरक भी थे। संक्षेप में, पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी का जीवन एवं साहित्यिक योगदान संस्कृत साहित्य की आधुनिकता और परंपरा के सेतु के रूप में जाना जाता है। वे एक ऐसे विद्वान थे जिन्होंने न केवल अतीत की गरिमा को सुरक्षित रखा बल्कि भविष्य के लिए भी एक बौद्धिक दृष्टिकोण का निर्माण किया। उनका कृतित्व आज भी शोधार्थियों, अध्येताओं एवं साहित्य प्रेमियों के लिए पथ-प्रदर्शक है।

प्रस्तावना:-

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान यहां के देश काल एवं परिस्थितियों भव्य पहचान रही है। भारत हमेशा से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दृष्टि से उन्नतशील रहा है। भारतीय इतिहास में सैकड़ो विद्वान, साहित्यकार, संगीतकार, कलाकार, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, दर्शन शास्त्री, शिक्षा शास्त्री विद्वानों ने अपना योगदान किया है। भारत की आदि भाषा संस्कृत का साहित्य जगत में विशेष महत्व है। संस्कृत साहित्य के प्रकांड

विद्वानों से एक नाम पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी जी का भी है। जिनका जन्म मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के समीप स्थित सीहोर जिला में हुआ।वह अपने व्यावसायिक एवं साहित्यिक जीवन का अधिकांश समय वाराणसी के काशी हिंदू विश्वविद्यालय में बिताया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का वैदिक कालीन भाषा संस्कृत साहित्य और उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके द्वारा संस्कृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में किए गए उत्थान के कारण इन्हें "सनातन कवि" के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत आलेख में संस्कृत साहित्य एवं उसकी अन्य विधाओं में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सारगर्भित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का जीवन परिचय:- भारतीय भूखंड के लगभग मध्य में स्थित राज्य मध्य प्रदेश के सीहोर जिला के बुधनी तहसील के अंतर्गत नागनेण गांव पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का पैतृक निवास रहा किन्तु इनका जन्म 22 अगस्त सन 1935 ई. को भोपाल के समीप कालियाखेड़ा गांव में पंडित नर्मदा प्रसाद द्विवेदी तथा श्रीमती लक्ष्मी बाई के पुत्र रत्न के रूप में हुआ। अपने जन्म के सम्बंध में नागणेर गांव के विषय में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का स्वयं कहना है कि मेरा उस गांव से जन्म से कोई संबंध नहीं है परंतु वहां मेरा पैतृक घर है जबकि जन्म भोपाल नगर के समीप स्थित कालियाखेड़ी गांव में हुआ, बचपन में मगरपूंछ के समीप स्थित पहाड़खेड़ी गांव में भी हमारे परिवार का निवास स्थान हुआ करता था। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी कुल तीन भाई और एक बहन थे उनका विवाह बाल्यकाल में ही चंदा देवी से हो गया था। प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत उच्च एवं उच्चतर शिक्षा की पढ़ाई लिखाई कर पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या, धर्म विज्ञान संकाय में सेवारत रहे, बाद में चलकर धर्म साहित्य शास्त्र के साहित्य विभाग में उन्हें विभागाध्यक्ष बना दिया गया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार, महानकवि, नाटककार और समीक्षक थे। आधुनिक संस्कृत आचार्य की परंपरा में आप देव वाणी संस्कृत के संपादक, प्रकांड विद्वान तथा नूतन संस्कृत साहित्य का सर्जन करने वाले प्रमुख विद्वान रहे हैं। बाल्यकाल में 8 वर्ष की अल्प आयु में इनके पिताजी का देहावसान तथा पिता की मृत्यु के 6 माह पश्चात ही इनकी माता जी का भी स्वर्गवास हो गया। इन सब विषय परिस्थितियों ने प्रारंभ से ही पारिवारिक, नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाने के तैयार कर दिया। जीवन रुपी भवसागर के विभिन्न उतार-चढ़ाव को देखा, समझा, जाना और उसके अनुसार निर्णय कर आगे बढ़ने की निरंतर कोशिश किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी वर्ष 1989 ई. में साहित्य, धर्म, आध्यात्म एवं पौराणिक नगरी काशी में निवासरत रहते हुए अपना शरीर त्याग दिया।

प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा एवं संस्कार:- पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का प्रारंभिक जीवन कठिनाइयां भरा था क्योंकि कम उम्र में ही बाल्यावस्था में उनके माता-पिता दोनों का स्वर्गवास हो गया था। प्रारंभिक शिक्षा से उच्च एवं उच्चतर शिक्षा तक उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा। मां प्राथमिक शिक्षक होती है इन्हें भी सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान माता-पिता ने ही कराया इन दोनों के गुजर जाने के बाद इन्हें इनके मामा ने कुछ दिनों तक शिक्षा दिलाई। अपने जीवन में श्री विष्णु सहस्त्रनाम संस्कृत काव्य को पढ़कर शुभारंभ किया और अपने जीवन में प्रेरणा प्राप्त किया था। इनके पिता पंडित नर्मदा प्रसाद द्विवेदी भोपाल में पटवारी पद पर कार्यरत थे। इधर-उधर स्थानांतरण के कारण इनको प्रारंभ में स्कूल एवं शिक्षक बदलने पड़ते किंतु इनकी अल्पायु में ही पहले पिता और फिर माता का देहांत हो जाने के कारण शिक्षा संस्कार में दिक्कतें आयी। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत विद्यालय में पठन-पाठन करते हुए मध्यमा कक्षा को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपरांत वर्ष 1950 में काशी आ गए और काशी हिंदू विश्वविद्यालय में प्राचीन विद्या धर्म विज्ञान संकाय में शास्त्री कक्षा के पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। वह अपनी लगन मेहनत और सीखने की इच्छा शक्ति के कारण में धीरे-धीरे संस्कृत विषय में पारंगत होते चले गए। एक समय ऐसा आया कि उन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय की पंडित महादेव शास्त्री का शिष्य बनने का मौका मिल गया, उनके श्री चरणों में बैठकर संस्कृत साहित्य के विभिन्न विधाओं का अध्ययन किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने 1953 ई. में शास्त्री परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने वर्ष 1956 में शास्त्रीय आचार्य की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, इस

उपलब्धि के लिए उन्हें चौबे विश्वेश्वर नाथ संकाय में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। संस्कृत भाषा एवं साहित्य में स्नातक एवं परास्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत धीरे धीरे देश भर के संग्रहों से 23 हस्तलेखों को इकट्ठा कर विश्व में पहली बार रघुवंश दर्पण नामक टीका का संपादन किया। इसी बीच सन 1965 में पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, मध्य प्रदेश से इन्होंने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की तथा वर्ष 1974 ई में डॉक्टरेट ऑफ लिटरेचर की भी उपाधि से विभूषित किया गया।

पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी व्यक्तित्व एवं सेवा भाव:-व्यक्तित्व व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं एवं बाह्य गुणों का समन्वय होता है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के मन में सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा, उदारता, निश्चलता और निर्मलता भरी हुई थी। वह ज्ञान खोज की परंपरा एवं उसकी साधना में अनवरत लगे हुए थे। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी मध्य प्रदेश की रायपुर में स्थित दूधाधारी श्री वैष्णव संस्कृत महाविद्यालय से संस्कृत साहित्य विषय की व्याख्याता पर पद पर व्यावसायिक कार्य प्रारंभ किया, कुछ वर्षों उपरांत काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्राचीन विद्या विज्ञान संकाय के रीडर पद पर तथा साहित्य विभागाध्यक्ष पद को प्राप्त कर विभूषित किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी काशी हिंदू विश्वविद्यालय में 18 वर्षों तक संस्कृत साहित्य विभाग के अध्यक्ष रहे। इस बीच आनंदवर्धन अलंकार, भीमसीन सहित अलंकार सर्वश्रेष्ठ आदि का प्रकाशन किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के एक महान पुरोधा थे।

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी सम्मान एवं पुरस्कार:-पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी भारतीय संस्कृत साहित्य के पारंपरिक दृष्टिकोण को मन कर्म वचन से अपनाया और अपने लेखन शैली में ब्राह्मी लिपि, शारदा लिपि और नागरी लिपि का उपयोग किया है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी कीकई पुस्तकों संस्कृत साहित्य शब्दकोश को लिखने के साथ-साथ सैकड़ो शोध पत्रों का प्रकाशन कराया, उनके सानिध्य में रहकर लगभग 90 से अधिक रिसर्च स्कॉलर देश दुनिया में अपना शैक्षिक योगदान कर रहे हैं। पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी ने देश विदेश में भारतीय संस्कृति एवं साहित्य का परचम लहराया है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने नेपाल, हॉलैंड आदि देशों में समय-समय पर विश्व संस्कृत सम्मेलन में शामिल होकर भारत का मान बढ़ाया। आप भारत के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में कई अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन में शामिल हुए। इन सभी के बीच पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार, व्यास पुरस्कार, भोज पुरस्कार वाल्मिकी पुरस्कार, विश्व भारती पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया है। इसके साथ-साथ 15 अगस्त 1978 को तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी द्वारा इन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। यह सब पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके संस्कृत साहित्य में योगदान का प्रतिफल है।

पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी की कृतियां:- पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी बाल्यकाल से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अल्पायु में ही माता-पिता का साया सर से उठ जाने के कारण व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक जिम्मेदारियां उठा लिया इनकी अध्ययन काल से ही लेखन के प्रति रुचि अध्यापन कल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। इनके द्वारा कई काव्य, महाकाव्य, नाटक, कथा, गीतकाव्य ग्रंथ, काव्यशास्त्री ग्रंथ, शब्दकोश आदि लिखे। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी की कुल 30 प्रकाशित मौलिक रचनाओं में तीन महाकाव्य, तेरह काव्य, दो नाटक , तीन कथाएं, कई मोनोग्राफ तथा कालिदासशब्दनविक्रम प्रमुख है। इनके लेखन में भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मौलिक और उस समय की देश काल एवं परिस्थितियों का चित्रण दिखाई पड़ता है। संस्कृत के कई विद्वानों महाकवि कालिदास की कृतियों का विश्लेषण एवं वर्णन प्रस्तुत किया है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के महाकाव्य उत्तरसीतारामचरितम्, स्वतंत्रसंभोगकुमारम्, विजयनम् आदि प्रमुख है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने.....आदि है, इनकी प्रमुख शास्त्रीय कृतियां काव्यालंकार ..... है इन्होंने एक कोष कालिदास शब्द अनुक्रम को की शब्द अनुक्रमणिका तैयार की प्रसाद द्विवेदी कई संपादित ग्रंथ रघुवंशदर्पण,

कालिदासग्रंथावली, रितुसंघार, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, काव्यप्रकाश सुधाकरम्, भारतीय काव्य मीमांसा, श्रृंगार प्रकाश, सत्यनारायण व्रतकथा, शिवमहिमा स्त्रोतम्, मेघदूतम, रघुवंशम आदि पर पांडुलिपियों भी तैयार की। यह सब उनके संस्कृत साहित्य के विकास का अप्रतिम उदाहरण है।

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी स्मृति शेष:- संस्कृत साहित्य के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान, लेखक एवं साहित्यकार का शैक्षिक, व्यावसायिक जीवन धर्म, आध्यात्म,साहित्य और संस्कृति की नगरी काशी में अधिकांश समय बिताया। देश-विदेश में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में सैकड़ो शोध प्रबन्ध, आलेख तथा जनरल प्रकाशित हुए हैं।कई पुस्तकों एवं शब्दकोष के लेखक का जीवन के अंतिम क्षण मकाशी नगरी में रहते हुए 22 जनवरी 2021 को देहावसान हो गया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी कुल 86 वर्ष की उम्र में विश्व विख्यात विद्वान एवं कवि का देहावसान संस्कृत साहित्य के जगत में शोक की लहर व्याप्त हो गई। इसकी सूचना पर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि "पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी संस्कृत की महान विभूति महोउपाध्याय के निधन की सूचना अत्यंत दुखद है उन्होंने संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में कई प्रतिमान गढ़े हैं उनका जाना समाज के लिए एक अपूरणीय छति है। दुःख की इस घड़ी में मैं उनके परिजन, प्रशंसकों और शुभचिंतकों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करता हूं! ओम शांति!" पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी जैसे महान संस्कृत की विद्वान को खोना भारतीय संस्कृत साहित्य की अपूरणीय छति है।

उपसंहार:-

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी मध्य प्रदेश में जन्मे बड़े हुए प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा प्राप्त किया किंतु उच्च एवं उच्चतर शिक्षा तथा व्यवसायिक जीवन का अधिकांश समय काशी हिंदू विश्वविद्यालय में व्यतीत किया। इन्होंने संस्कृत साहित्य और उसकी भाषा को पोषित कर देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप नया स्वरूप प्रदान किया। अनेक साहित्यिक सर्जना के कारण इनकी ख्याति देश विदेश के कोने-कोने में रही है अन्य योगदानों के साथ-साथ पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी का सबसे बड़ा योगदान महाकवि कालिदास की संपूर्ण कृतियों का संस्कृत साहित्य में व्यापक समावेश और उपयोगिता को उजागर करना रहा है। देश के ऐसे प्रकांड संस्कृत विद्वान और मनीषी को खोना जिसकी क्षतिपूर्ति आने वाले कई सौ सालो में होना मुश्किल है। भगवान उनके आने वाली पीढ़ी को उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और साहित्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों का गुणगान, प्रचार प्रसार और बताए गए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। साथ ही साथ संस्कृत साहित्य के जुड़े हुए तमाम विद्वानों, कवियों, साहित्यकारों कथाकारों, काव्यकारो और लेखकों को भी प्रेरणा मिलती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखंभा भारती एकडेमी, वाराणसी, वर्ष 2019.
2. शुक्ल एवं द्विवेदी, संस्कृत साहित्य के वट वृक्ष, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र,नई दिल्ली 2018.
3. त्रिपाठी एवं नरेन्द्र दत्त, संस्कृत साहित्य का भविष्य, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली वर्ष 2018.
4. पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी, राम परिसंख्या, कालीदास संस्थान, वाराणसी वर्ष 2008.
5. पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी, शरशय्या खंडकाव्य, कालीदास संस्थान, वाराणसी, वर्ष 2002.
6. डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', शब्दार्थरत्नम्, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी वर्ष 1999.
7. डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', हिन्दू धर्म व्याख्यान, क्योटो तथा हिरोशिमा, जापान, वर्ष 1997.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

सुष्मिता सिंह[1], डॉ. शिवाकांत पाण्डेय[2], **"पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी: परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन"** *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.106-110, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

सुष्मिता सिंह और डॉ. शिवाकांत पाण्डेय

For publication of research paper title

"पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी: परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/